हैप्पी प्रिन्स

ऑस्कर वाइल्ड

हैप्पी प्रिन्स

ऑस्कर वाइल्ड

नगर के बीच में, एक बहुत ऊँचे स्तंभ पर हैप्पी प्रिन्स की मूर्ति लगी थी. मूर्ति पर सोने की परतें चढ़ी हुई थीं. उसकी आँखों में दो सुंदर नीलम लगे हुए थे और तलवार की मूठ पर एक बड़ा लाल रूबी चमक रहा था.

एक रात एक नन्हीं अबाबील उस नगर में उड़ती हुई आई. उसने स्तंभ पर खड़ी मूर्ति को देखा. वह हैप्पी प्रिन्स के दोनों पाँव के बीच में आकर बैठ गई.

"मेरे पास स्वर्ण शयनकक्ष है," उसने अपने आप से कहा और सोने की तैयारी करने लगी. लेकिन जैसे ही वह अपने सिर को पंख से ढकने लगी, पानी की एक बूँद उस पर गिरी. फिर एक और बूँद गिरी. जब तीसरी बूँद गिरी तो उसने ऊपर देखा.

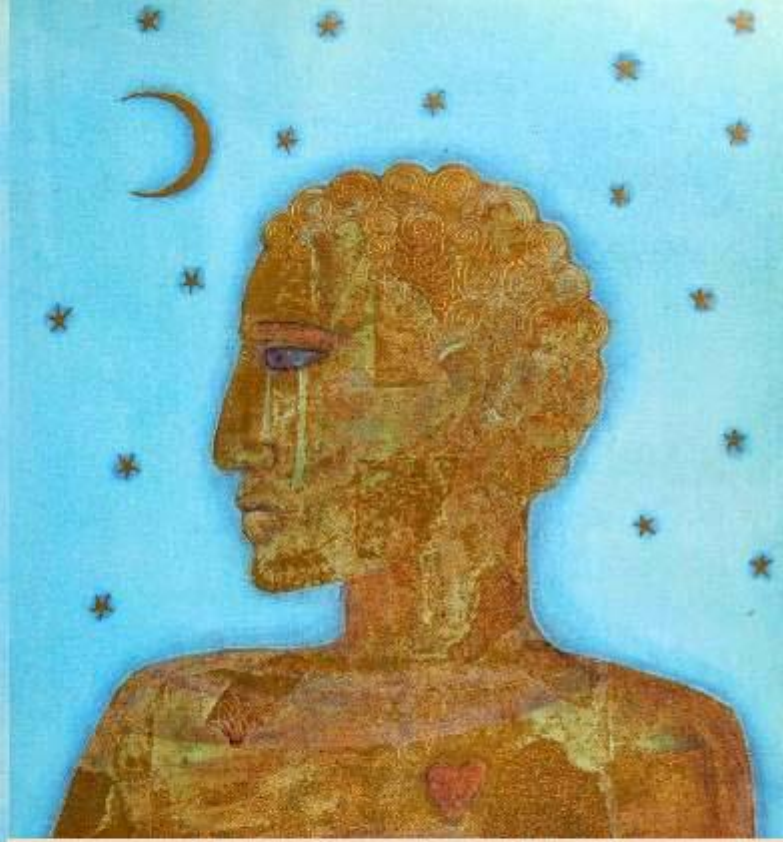

हैप्पी प्रिन्स की आँखें आँसुओं से भरी हुई थीं और उसके सुनहरी गालों पर आँसू बह रहे थे. चाँदे के प्रकाश में उसका चेहरा इतना सुंदर दिखाई दे रहा था कि अबाबील का मन करुणा से व्यथित हो गया.

“तुम कौन हो?” उसने पूछा.

“मैं हैप्पी प्रिन्स हूँ.”

“फिर तुम रो क्यों रहे हो?” अबाबील ने पूछा. “तुम ने मुझे भिगो ही दिया है.”

“जब मैं जीवित था और मेरे भीतर मानव का हृदय था,” मूर्ति ने कहा, “मुझे पता न था कि दुःख क्या होता हैं. मेरे दरबारी मुझे हैप्पी प्रिन्स बुलाते थे. और मेरी मृत्यु के बाद उन्होंने मुझे यहाँ इतनी ऊँचाई पर खड़ा कर दिया है कि मैं अपने नगर के सब लोगों का दुःख देख सकता हूँ. यद्यपि मेरा हृदय सीसे का है लेकिन मैं अपने आँसू रोक नहीं पाता.”

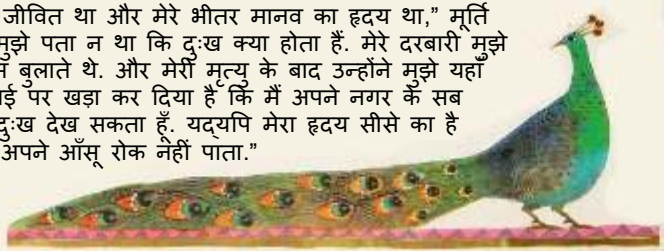

“बहुत दूर,” मूर्ति ने आगे कहा, “एक गरीब का घर है. वहाँ एक छोटा लड़का बीमार है और बिस्तर में लेटा है. वह संतरे मांग रहा है. लेकिन उसे देने के लिए उसकी माँ के पास नदी के पानी के अतिरिक्त कुछ नहीं है. इसलिए वह रो रहा है. अबाबील, क्या मेरी तलवार की मूठ में लगी रूबी निकाल कर तुम उसके पास नहीं ले जाओगी?”

"इजिप्ट में मेरे मित्र मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं," अबाबील ने कहा. "मेरे मित्र नील नदी के ऊपर उड़ रहे है और कमल के फूलों के साथ बातें कर रहे हैं. शीघ्र ही वह महान राजा के मकबरे में सोने चले. जायेंगे. राजा स्वयं वहाँ एक चित्रित ताबूत में है. उसके गले में हल्के हरे रंग के जेड की एक माला है. उसके हाथ सूखे पत्तों जैसे है."

"अबाबील, नन्हीं अबाबील," प्रिन्स ने कहा, "क्या तुम एक रात मेरे साथ नहीं रहोगी और मेरी दूत न बनोगी?"

हैप्पी प्रिन्स इतना मायूस दिखाई दे रहा था कि अबाबील ने मूर्ति की तलवार में लगी रूबी निकाल ली और उसे अपनी चोंच में पकड़ कर नगर के घरों के ऊपर उड़ने लगी.

वह बड़े गिरजाघर की मीनार के पास से निकली, जिस पर देवदूतों की सफेद संगमरमर की मूर्तियाँ बनी थीं. वह नदी के ऊपर से गई.

उसने जहाज़ों के मस्तूलों पर लटकती कंदीलें देखीं. आखिरकार, वह गरीब के घर पहुँच गई जहां बीमार लड़का लेटा था और रूबी एक मेज़ पर गिरा दी.

फिर वह उड़ कर हैप्पी प्रिन्स के पास लौट आई और उसे बताया कि उसने क्या किया था. “कितनी अनोखी बात है कि यद्यपि बहुत ठंड है लेकिन मैं गर्म महसूस कर रहा हूँ,” प्रिंस ने कहा.

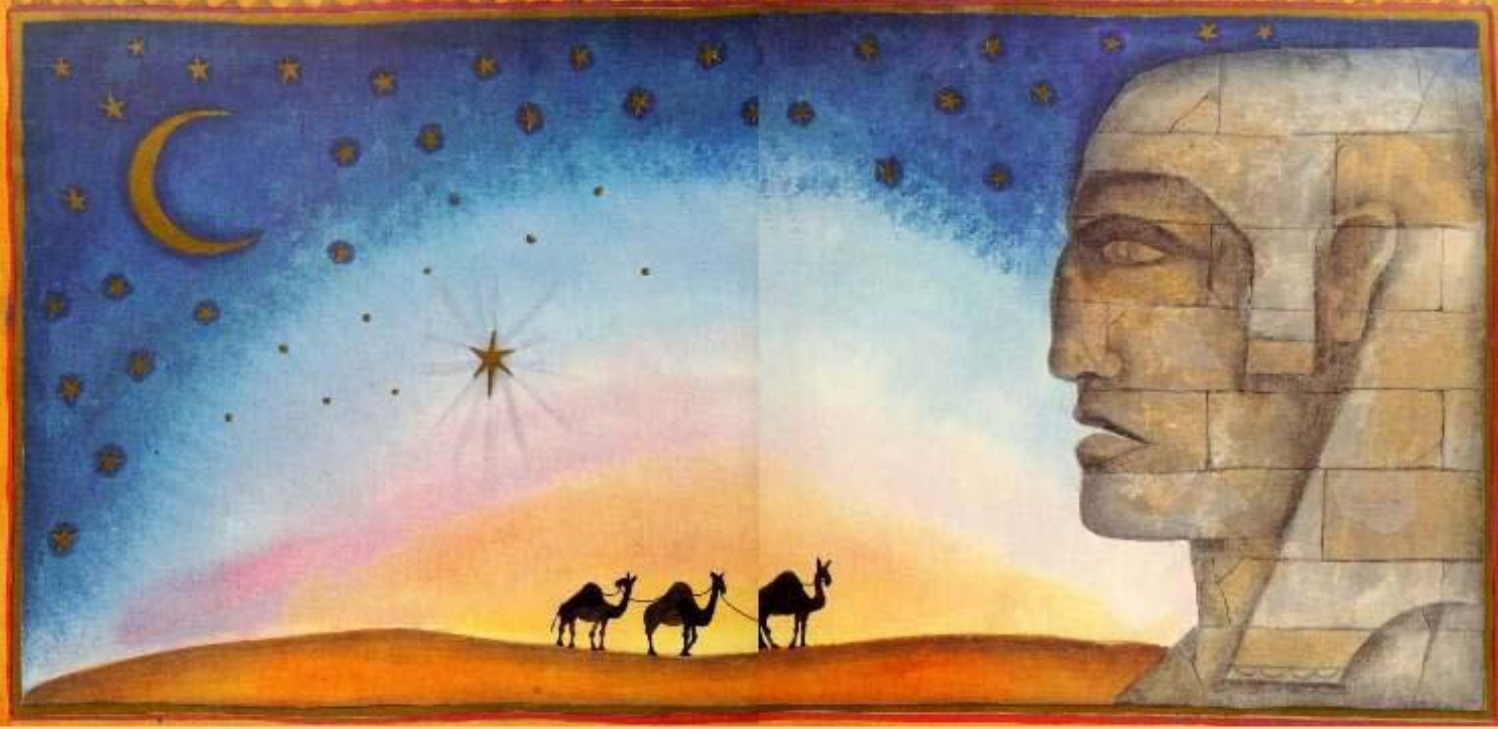

अगले दिन जब आकाश में चाँद दिखाई देने लगा, अबाबील ने ऊपर हैप्पी प्रिन्स की ओर देखा. “मैं इजिप्ट जा रही हूँ,” उसने कहा.

“अबाबील, नन्हीं अबाबील,” प्रिन्स बोला, “क्या तुम एक और रात मेरे साथ न रहोगी?”

“मेरे मित्र इजिप्ट में मेरी राह देख रहे हैं,” अबाबील ने कहा. “वहाँ ग्रेनाइट के विशाल सिंहासन पर भगवान् मेमनन विराजमान हैं. सारी रात वह तारों को निहारते हैं और जब भोर का तारा दिखाई देता है तो वह प्रसन्नता से एक बार किलकारी मारते हैं और फिर खामोश हो जाते हैं. दोपहर के समय जंगल के शेर नदी किनारे पानी पीने आते हैं.”

"अबाबील, नन्हीं अबाबील," प्रिन्स ने कहा, "नगर में बहुत दूर एक घर की अटारी में मुझे एक युवक दिखाई दे रहा है. वह नाट्यशाला के लिए एक नाटक लिख रहा है. लेकिन उसे इतनी ठंड लग रही है कि नाटक पूरा करना उसके लिए संभव नहीं है."

"मैं सिर्फ एक रात और तुम्हारे साथ रहूँगी," अबाबील ने कहा, वह बहुत दयालु थी. "क्या मैं दूसरी रूबी ले जाऊं?"

"अफ़सोस! अब मेरे पास कोई रूबी नहीं है," प्रिन्स ने कहा. "मेरे पास मेरी आँखें ही बची हैं. वह भारत के अनमोल नीलमों से बनी है. एक नीलम निकाल लो और उसे उस युवक के पास ले जाओ."

"प्रिय प्रिंस," अबाबील ने कहा. "मैं ऐसा नहीं कर सकती." और वह रोने लगी.

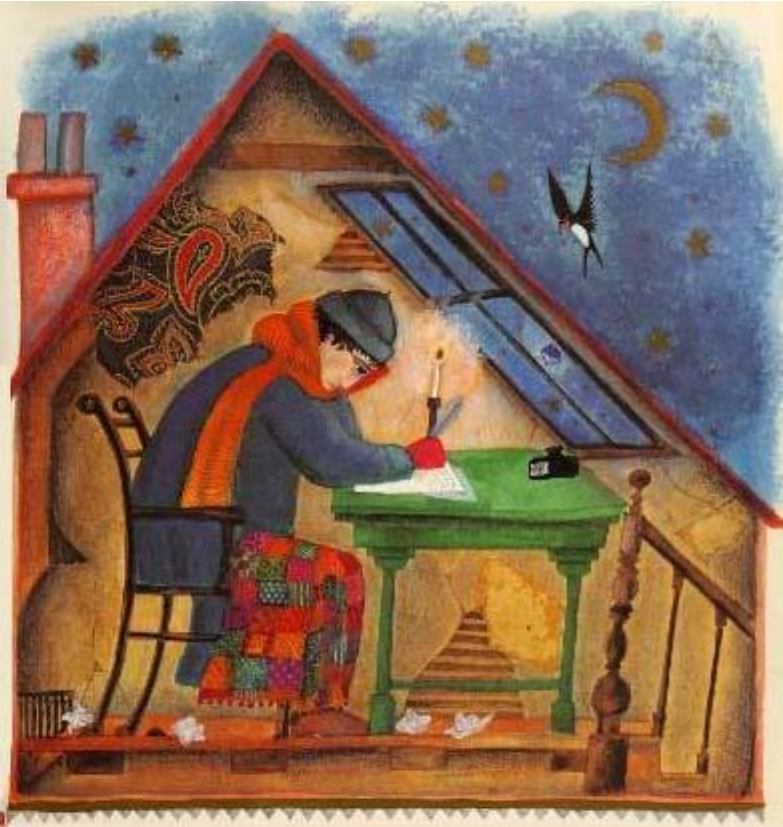

"अबाबील, नन्हीं अबाबील," प्रिंस बोला, "जैसा मैं कह रहा हूँ वैसा ही करो."

तो अबाबील ने मूर्ति की एक आँख से नीलाम निकाल लिया और उस युवक की अटारी की ओर उड़ चली. और जब युवक ने अपना सिर उठाया तो उसने अपनी मेज़ पर एक नीलम देखा.

"अब मुझे तुम्हें अलविदा कहना ही होगा," अगले रात जब चाँद फिर दिखाई दिया, अबाबील चिल्लाई. "मैं इजिप्ट जा रही हूँ!"

"अबाबील, नन्हीं अबाबील," प्रिंस ने कहा, "क्या एक रात और तुम मेरे साथ न रहोगी?"

"शीत ऋतु है," अबाबील ने उत्तर दिया, "और शीघ्र ही यहाँ बर्फ गिरने लगेगी. इजिप्ट में खजूर के पेड़ों पर धूप गर्म है और मगरमच्छ कीचड़ में लेटे रहते हैं और बिना हिले-डुले इधर-उधर देखते हैं. प्रिय प्रिंस अब तुम्हें छोड़ कर मुझे जाना ही होगा. लेकिन अगले वसंत में मैं तुम्हारे लिए दो सुंदर रत्न ले कर आऊँगी."

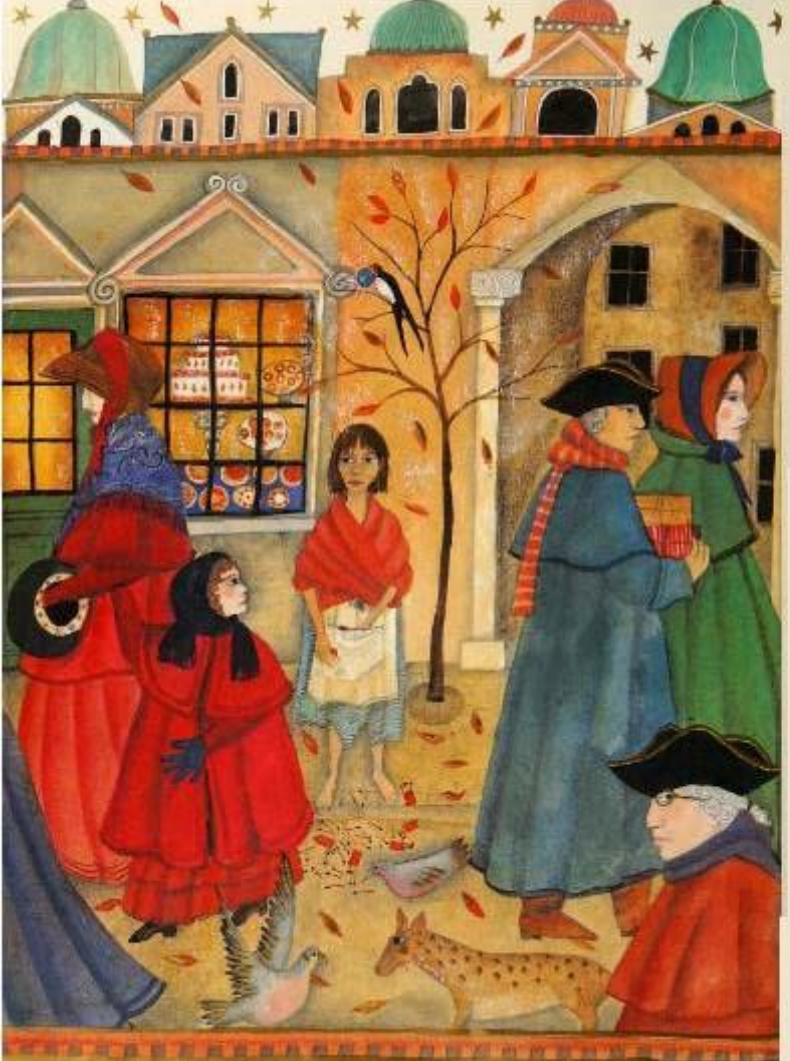

“वहाँ नीचे चौराहे पर,” हैप्पी प्रिन्स ने कहा, “माचिस बेचने वाली एक छोटी लड़की खड़ी है. उसकी सारी माचिसें गंदी नाली में गिर गई हैं. उसके पास न जुराबें हैं न जूते और उसका सिर भी ढका हुआ नहीं है. मेरी दूसरी आँख से भी नीलम निकाल लो और जाकर उसे दे दो.”

“मैं एक रात और तुम्हारे साथ रहूँगी,” अबाबील ने कहा, “लेकिन मैं तुम्हारी आँख से नीलाम नहीं निकाल सकती क्योंकि तुम बिलकुल अंधे हो जाओगे.”

“अबाबील, नन्हीं अबाबील,” प्रिंस ने कहा, “जैसा मैं तुम्हें कह रहा हूँ वैसा करो.”

तो अबाबील ने प्रिंस की दूसरी आँख में से नीलाम निकाल लिया और उसे लेकर तेज़ी से उस लड़की के पास गई और नीलम उस की हथेली में रख दिया.

फिर अबाबील प्रिंस के पास वापस आ गई. “अब तुम पूरी तरह अंधे हो गये हो,” उसने कहा, “इसलिए मैं सदा तुम्हारे पास ही रहूँगी”

अगले दिन वह सारा समय प्रिंस के कंधे पर बैठी रही और जो कुछ उसने अपरिचित जगहों में देखा था उनकी कहानियाँ उसे सुनाती रही. उसने उन लाल रंग के आइबिस पक्षियों के बारे में बताया जो नील नदी के किनारे पर एक कतार में खड़े होकर मछलियाँ पकड़ते हैं.

उस विशाल हरे सांप के बारे में बताया जो खजूर के पेड़ पर चढ़ जाते हैं.

स्फिंक्स के विषय में बताया जो रेगिस्तान में रहती है और सब कुछ जानती है और उतनी ही पुरानी है जितनी पुरानी दुनिया है.

चाँद के पहाड़ों के राजा के बारे में बताया जो आबनूस समान काला है और एक बड़े हीरे की पूजा करता है.

“प्रिय नन्हीं अबाबील,” प्रिंस ने कहा, “तुम ने मुझे आश्चर्यजनक रहस्यमयी बातें बताईं. लेकिन दुर्भाग्य से बड़ा कोई रहस्य नहीं होता. नन्हीं अबाबील, मेरे नगर के ऊपर उड़ कर चक्कर लगाओ और मुझे बताओ कि वहां तुम्हें क्या दिखाई देता है.”

अबाबील ने उस विशाल नगर का चक्कर लगाया और उसने देखा कि धनवान लोग अपने सुंदर घरों में उत्सव मना रहे थे और गरीब उनके घर के फाटकों के पास बैठे थे. वह उड़ कर प्रिंस के पास वापस आई और जो कुछ देखा था उसे बताया.

“मुझ पर सोने की परतें चढ़ी हुई हैं,” प्रिंस ने कहा. “तुम्हें सोने एक-एक परत उतारनी होगी और उन गरीबों को देनी होगी.”

एक-एक कर सोने की परतें अबाबील उतारती गई जब तक कि हैप्पी प्रिन्स भद्दा और धूसर रंग का दिखाई न देने लगा. एक के बाद एक सोने की परत वह गरीब लोगों के पास ले गई. बच्चों के चेहरे खिल उठे और वह गलियों में हँसने और खेलने लगे.

फिर बर्फ गिरने लगी और बर्फ गिरने के बाद खूब ठंड पड़ी. हर कोई फर के कपड़े पहनने लगा. छोटे लड़के, चमकीली लाल रंग की टोपियाँ पहने, बर्फ पर स्केटिंग करने लगे.

बेचारी अबाबील ठंड में ठिठुरती गई, ठिठुरती गई, लेकिन वह प्रिंस को छोड़ कर न गई. वह उससे बहुत प्यार करती थी.

लेकिन आखिरकार वह समझ गई कि उसकी मृत्यु निकट थी. “अलविदा प्रिय प्रिंस!” वह बुदबुदाई. उसने हैप्पी प्रिन्स को प्यार किया और उसके पाँव में गिर गई. वह मर गई थी.

उसी पल मूर्ति के भीतर से चटकने की एक अनोखी आवाज़ आई. सीसे के बने उसके दिल के दो टुकड़े हो गये थे. ठंड बहुत ही भयंकर थी.

अगली सुबह मेयर अपने नगर पार्षदों के साथ चौराहे में घूम रहा था. “हे भगवान्! हैप्पी प्रिन्स कितने दरिद्र लग रहे हैं!” उसने कहा. “और उनके पाँव के निकट एक मरा हुआ पक्षी है!” उसने आगे कहा. “हमें आदेश देना चाहिए कि पँक्षियों को यहाँ मरने की अनुमति नहीं है.”

उन्होंने हैप्पी प्रिन्स की मूर्ति को गिरा दिया. फिर उस मूर्ति को भट्टी में पिघला दिया. लेकिन मूर्ति का टूटा हुआ दिल नहीं पिघला. इसलिए उसे मिट्टी के ढेर में वहाँ फैंक दिया जहाँ मृत अबाबील पड़ी थी.

"इस नगर की दो सबसे मूल्यवान चीज़ें मेरे लिए लेकर आओ," ईश्वर ने अपने एक देवदूत से कहा. देवदूत सीसे का टूटा हुआ दिल और मृत पक्षी ले आया.

"तुम ने सही चुनाव किया है," ईश्वर ने देवदूत से कहा, "मेरे स्वर्गलोक के उद्यान में यह नन्हा पक्षी गीत गायेगा और हैप्पी प्रिन्स सदा वहाँ रहेगा."

समाप्त